Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

U. G. Sem – IV
MJC – 05 : Western Philosophy
आधुनिक पाश्चात्य दर्शन (Modern Western Philosophy)

## 'बुद्धिवाद' (Rationalism)

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में मुख्यत: दो संप्रदाय पाये जाते हैं – बुद्धिवाद (Rationalism) तथा अनुभववाद (Empiricism)। डेकार्ट, स्पिनोजा तथा लाइबनीज बुद्धिवादी दार्शनिक हैं तथा लॉक, बर्कले और ह्यूम अनुभववादी दार्शनिक हैं।

'बुद्धिवाद' के अनुसार बुद्धि ज्ञान-प्राप्ति का एकमात्र साधन है। अनुभव के द्वारा यथार्थ ज्ञान कदापि नहीं मिल सकता है। बुद्धिवाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान वह ज्ञान है जो सार्वभौम (Universal) और अनिवार्य (Necessary) हो। यह ज्ञान सार्वभौम है क्योंकि यह सभी स्थान और सभी काल में सत्य होता है। यह ज्ञान अनिवार्य है, क्योंकि इसका अपवाद या विपरीत सत्य नहीं हो सकता। जैसे – 2+2=4 – यह ज्ञान सभी स्थान और काल में सत्य है और इसका अपवाद कभी सत्य नहीं हो

सकता। बुद्धिवादियों का यह दावा है कि इस प्रकार के यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति केवल बुद्धि द्वारा ही संभव है। अनुभव सीमित है इसलिए इसके द्वारा सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान मिलना असंभव है।

बुद्धिवाद में जन्मजात या सहज प्रत्ययों का समर्थन किया गया है। जन्मजात प्रत्यय मनुष्य के मस्तिष्क में जन्म से ही विद्यमान रहते हैं। इन्हें अनुभव के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। ये स्वयंसिद्ध (Self - Proved) हैं क्योंकि इनको सिद्ध करने के लिए किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं होती। सम्पूर्ण ज्ञान इन्हीं जन्मजात प्रत्ययों में अव्यक्त रूप से निहित है। इन्हीं प्रत्ययों को विकसित करके बुद्धि हमें यथार्थ ज्ञान देती है।

बुद्धिवाद के अनुसार ज्ञान की प्राप्ति निगमनात्मक पद्धति (Deductive Method) द्वारा होती है। गणितशास्त्र में निगमनात्मक या ज्यामितीय विधि (Geometrical Method) का प्रयोग होता है। गणित में और विशेषकर ज्यामिति में कुछ स्वयंसिद्ध वाक्यों से आरंभ कर निगमनात्मक विधि द्वारा निष्कर्ष निकाला जाता है। इसी प्रकार बुद्धि स्वयंसिद्ध जन्मजात प्रत्ययों से आरंभ कर उनके विश्लेषण द्वारा हमें यथार्थ ज्ञान प्राप्त कराती है।

डेकार्ट के अनुसार हमें बुद्धि के द्वारा ही यथार्थ और असंदिग्ध ज्ञान मिलता है। डेकार्ट के अनुसार तीन प्रकार के प्रत्यय (Ideas) हैं — ① आगन्तुक प्रत्यय (Adventitious Ideas) — जो बाह्य-जगत में ~~उत्पन्न~~ स्थित वस्तुओं से उत्पन्न होते हैं। ② काल्पनिक प्रत्यय (Fictitious Ideas) — जो कल्पना द्वारा उत्पन्न होते हैं जैसे, सोने का पर्वत। ③ जन्मजात प्रत्यय (Innate Ideas) — ये प्रत्यय मनुष्य में जन्म से ही विद्यमान होते हैं। ये ईश्वर-प्रदत्त हैं। आत्मा, ईश्वर, द्रव्य, कार्य-कारण नियम आदि का ज्ञान जन्मजात है। स्पिनोजा तीन प्रकार के ज्ञान मानते हैं — ① काल्पनिक ज्ञान (Imaginative Knowledge) ② अनुमानजन्य ज्ञान (Inferential Knowledge) और ③ प्रातिभ ज्ञान। काल्पनिक ज्ञान अस्पष्ट और अपूर्ण होता है। यथार्थ ज्ञान बुद्धिजन्य होता है। अनुमानजन्य ज्ञान और प्रातिभ ज्ञान बौद्धिक ज्ञान के ही दो भेद हैं। ये दोनों ही यथार्थ ज्ञान हैं जिनकी प्राप्ति बुद्धि द्वारा होती है। बुद्धि निगमनात्मक विधि या गणितिक विधि द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त करती है। डेकार्ट की तरह लाइबनीज भी मानते हैं कि जन्मजात प्रत्ययों के आधार पर ही बौद्धिक ज्ञान की प्राप्ति होती है। डेकार्ट कुछ ही प्रत्ययों को जन्मजात मानते हैं किन्तु लाइबनीज

के अनुसार सभी प्रत्यय जन्मजात हैं। ये जन्मजात प्रत्यय मूल रूप में हमारे मस्तिष्क में अविकसित रूप से पड़े रहते हैं और उस समय हमें उनके बारे में चेतना नहीं रहती। जब ये विकसित होते हैं तो इनके बारे में चेतना (Consciousness) हो जाती है। सारा ज्ञान इन्हीं सहज प्रत्ययों में छिपा हुआ है। बुद्धि इन्हें विकसित कर हमें ज्ञान देती है।

ज्ञान-प्राप्ति में बुद्धि (reason) के महत्व को स्वीकार करना - बुद्धिवाद की बहुत बड़ी देन है। किन्तु ज्ञान की उत्पत्ति के विषय में इस सिद्धान्त को संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता। इसमें निम्न-लिखित दोष पाए जाते हैं —

(1) बुद्धिवाद एकांगी (One-sided) है। इसके अनुसार केवल बुद्धि ही ज्ञान-प्राप्ति का साधन है। अनुभव का यह पूर्ण बहिष्कार करता है। अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान सदैव असत्य नहीं होता। अनुभव की उपेक्षा कर केवल बुद्धि को ही ज्ञान-प्राप्ति का साधन बतलाना एकांगिता एवं हठधर्मिता का प्रतीक है।

(2) बुद्धिवाद का आदर्श सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान की प्राप्ति है जो चरितार्थ नहीं हो सकता। विज्ञान गतिशील एवं विकासशील होते हैं। इसके निष्कर्ष हमेशा

के लिए सत्य नहीं होते। वैज्ञानिक नियम परिवर्तनशील हैं। इनमें समय-समय पर सुधार होते रहते हैं। आवश्यकता पड़ने पर ये असत्य सिद्ध हो जाते हैं और इनके स्थान पर नए नियम आ जाते हैं। सिर्फ गणित में ही सार्वभौम एवं अनिवार्य ज्ञान संभव है। प्राकृतिक विज्ञानों में सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। केवल गणित को आदर्श मानकर ज्ञान-विज्ञान का रूप निर्धारित करना अनुचित है।

(3) बुद्धिवाद का आदर्श गणित है और गणित की विधि निगमनात्मक है। बुद्धिवाद निगमनात्मक विधि का ही एकमात्र विधि मानता और आगमनात्मक विधि अवहेलना करता है।

(4) बुद्धिवाद बुद्धि को इन्द्रिय-संवेदनों से स्वतंत्र मानता है। किन्तु बुद्धिजन्य ज्ञान भी अनुभव से पूर्ण स्वतंत्र नहीं होते। अनुभव के आधार पर ही हम 2+2=4 की सत्यता समझ सकते हैं।

(5) बुद्धिवाद बौद्धिक ज्ञान की प्रामाणिकता सिद्ध नहीं कर पाता। बुद्धिवाद के अनुसार 2+2=4 यथार्थ ज्ञान का सुंदर उदाहरण है। परन्तु अनुभव में हम पाते हैं कि 2+2=4 अर्थात दो और दो का योग सदैव चार नहीं होता। दो और दो का

योग कभी – कभी एक होता है। पानी की दो बूँदें पानी की दो अन्य बूँदों के साथ मिल कर एक बड़ी बूँद बनाती हैं। अत: बौद्धिक ज्ञान को सदैव वस्तु संवादी कहना उचित नहीं है।

बौद्धिक ज्ञान वस्तु-जगत् की घटनाओं के अनुकूल सदा नहीं होता। कभी – कभी बौद्धिक ज्ञान तथा वास्तविक घटनाओं के बीच प्रतिकूलता पायी जाती है, जैसे- दो और दो का योग सदा चार नहीं होता। अत: बौद्धिक ज्ञान को सार्वभौम और अनिवार्य कहना गलत है। बुद्धिवादी यथार्थ ज्ञान की अपूर्ण परिभाषा देते हैं। महान विचारक कांट के अनुसार "यथार्थ ज्ञान वही है जिसमें 'सार्वभौमिकता', 'अनिवार्यता' और 'नवीनता' के गुण विद्यमान हों।"
बुद्धि के द्वारा ज्ञान में सार्वभौमिकता और अनिवार्यता के गुण आते हैं पर नवीनता का गुण अनुभव के द्वारा ही प्राप्त होता है। इसलिए कांट का कहना है कि बुद्धि और अनुभव दोनों के संयोग से यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है। अनुभव के अभाव में ज्ञान में नवीनता नहीं आ सकती और न इसका विकास ही हो सकता है।